Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-9 | March-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

उच्च शिक्षा में व्यावसायिक पाठ्यक्रम की उपादेयता

सा□प शाम बब□राव

विभा□ाध्य□

□ालिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञा-न महाविद्यालय,
ता. शिरूर (का.) जि. बीड.

सारांश :-

देश □ी अगर २०२० तक सुपर पावर बनना है तो उसके लिए पढे-लिखे तथा दक्ष कर्मियों की जरुरत है। हमें काफी बड़ी संख्या में इनकी जरुरत है और इसके लिए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सक्त परिवर्तनों की जरुरत है। हमें ज्ञा-न □ी दूसरों से ले-ना -हीं है बलि□ हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम स्वयं कैसे ज्ञानवान बनें। दुर्भाग्य से देश में जो उच्च शिक्षा का स्तर है वह सही नहीं है अगर इसे समय रहते नही बदला गया तब इस देश को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे । यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार सभी विकास सूचकांकों में हम शिक्षा □ क्षेत्र में अंतिम १५ देशों की सूची में आते हैं। सरकार ने देश में ऐसे संस्थानों को काली सूची में डालना आरंभ कर दिया है, जो एक निर्धारित स्तर की शिक्षा नहीं दे पा रहे है । यह हमारी असफलता ही है कि हम उच्च गुणवत्ता वाले शि□ा केंद्रो को आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं और साथ ही विदेशी संस्थाओं को भी हमने देश में आने से रोके रखा है। अगर हम गुणवत्ता वाली शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं, तब विद्यार्थी विदेश शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाएँगे ही । इससे देश का नुकसान हो रहा है । हाल ही में विदेशी विश्वविद्यालयों □ी भारत में आने की अनुमति देने वाला जो बिल आया है उससे गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने में निश्चित रुप से आसानी होगी, परंतु इसके साथ ही विश्वविद्यालयों को और अधिक स्वायतता देनी होगी। नेशनल कमिशन फॉर हायर एजुकेशन एंड रिसर्च (एनसीएचईआर) एक अच्छी पहल है, परंतु डर यही है कि यह भी कहीं नौकरशाही संस्कृति में फँसकर न रह जाए, जो कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अब तक आड़े आती रही है।

प्रस्तावना :-

विकास का हर पहलू उत्साही और साहसी कारीगरों की आवश्यकता का अनुभव करता है। आधुनिक उद्योगों □ लिये विभिन्न प्रकार के कुशल प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकता होती है। आज हमारे देश में कुशल कारीगर एवं कुशल तकनीकी विशेषज्ञों की कमी एक

बहुत बड़ी समस्या बनकर सामने खड़ी है। हमें उद्योगों से जुड़े नये उद्यमियों की आवश्यकता है। आज निरुद्देश्य होती जा रही उच्च शिक्षा ो विराम देना है। हमे अंक पत्र प्रदाय करने वाली शिक्षा नहीं अपितु वर्तमान समस्या से मुक्ति पाना है। ऐसे में व्यावसायिक पाठ्यक्रम के माध्यम से बरोजगारी की समस्या से मुक्ति पाना संभव है। अर्थात यूँ कहें कि बढ़ती बेरोजगारी का एक उपाय शिक्षा का व्यावसायीकरण है।

ीता में श्रीकृष्ण ने ठिक ही कहा है, कर्म की श्रेष्ठता का मार्ग सच्चे ज्ञान और भक्ति से होकर जाता है। ज्ञान का अर्थः कार्य की समझ पैदा करना और भक्ति का अर्थ कार्य के प्रति समर्पण की भावना से है। एक उद्यमि और साहसी व्यक्ति में इन दोनों का हो-ना नितान्त आवश्यक है। इस ज्ञान और भक्ति के द्वारा ही कर्म अर्थात् कार्य निष्पादन श्रेष्ठ तरीके से सम्पन्न हो सकता है । कर्म योग में कहा ाया है- 'यागः कर्मेसु कौशलम्' अर्थात कार्य में कौशल विकसित करना योग है।

शैक्षिक प्रक्रिया में अध्ययन की गुरुकुल व्यवस्था, व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा में महत्त्वापूर्ण स्थान रखती है। इस व्यवस्था में कार्य अनुभव से ही ज्ञानार्जन होता था क्योंकि प्रत्येक कार्य ज्ञान और जानकारी का स्त्रोत कार्य होता था । हम अपनी परम्पराओं की ओर उन्मुख होते हैं तो दिखता है कि ुरुकुल में शिक्षा का स्थान व्यावसायिक शिक्षा के ही समान था । गुरु न केवल शिष्यों ो विषय ज्ञान देते थे अपितु उनके कौशल एवं संस्कारों को विकसित करने वाली शिक्षा को भी उन्होंने अत्यन्त महत्व दिया है । विभिन्न विषयों ज्ञान के साथ ही समाज मे शिष्य की क्या उपयोगिता होगी, यही शिक्षा का आधार स्तम्भ होता था।

व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण से सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति का निरन्तर विकास किया जा सकता है। इसलिए १९६८-१९८६ में बनायी गयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शैक्षिक सुधार के लिए बनाये गये विभिन्न आयामों ओर समितियों ने रोजगार उन्मुख व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया है । अन्तरराष्ट्रीय समुदायों ने भी व्यावसायिक शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया है। अन्तराष्ट्रीय तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा काँग्रेस (UNESCO.१९६६) में भी व्यावसायिक तकनीकी शिक्षा को २१ वीं शताब्दी की आवश्यकता रुप में प्रमाणित किया गया है। व्यावसायि और तकनीकी ज्ञान अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों को मधुन बनाने में उपयोगी होगा। इससे न केवल राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान व तकनीकी का अभाव-प्रभाव होगा अपितु संस्कृति, शांति, पर्यावरण, विकास, सामाजिक सद्भावना जैसे ज्वलंत उदाहरण भी हल करने में हमें सुविधा होगी।

भारत में व्यावसायिक शिक्षा हेतु विभिन्न प्रकार के सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन व संस्थाएँ कार्यरत है। जैसे-विद्यालयों द्वारा संचालित व्यावसायिक पाठ्यक्रम, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाएँ, पोलिटेकनिक महाविद्यालय, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय, ृषि विज्ञान केंद्र, गैर सरकारी संस्थान एवं विशिष्ट व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थन इत्यादि । इन संस्थानों द्वारा कृषि, उद्योग , व्यापार एवं वाणिज्य, अभियांत्रिकी, तकनीकी, गृह विज्ञान, स्वास्थ्य, पैरामेडिकल, सामाजिक विज्ञान और शिक्षण के पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे है। सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों ने निम्न बातों को ध्यान में रखते हुए हर स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा किस हद तक मजबूत हो सकती है, इसके लिए निर्धारित मापदंड बनाये है। प्राथमिक स्तर - चॉक बनाना, स्लेट बनाना, माध्यमिक स्तर - ृषि संबंधी जानकारी, क्राफ्ट जानकारी, उच्चस्तर - आय.टी., इलेक्ट्रानिक, सॉलिड स्टेट फिजिक्स टेक्नॉलॉजी, बायो टेक्नॉलॉजी आदीं।

यहा व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश परम्परागत शिक्षण पध्दतियों सें अलग रखे गये है। व्यावसायिक शिक्षा का मूलाधार शिक्षार्थियों में उन ुणों का विकास करना है, जिनका प्रयोग कर वह जीवन-यापन कर सके। अतः व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्यों को तीन आधारभूत स्तम्भों मे र ा ाया है - व्यावसायिक कौशल का विकास करना, आत्मनिर्भरता की योग्यता विकसित करना, माँग और पूर्ति का अन्तार म करना।

आज व्यावसायिक पाठयक्रमो का सशक्तिकरण आवश्यक हो गया है। व्यावसायिक शिक्षा महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करती है। हमारी संकटपूर्ण सम्पदा उसी दशा में जीवित रह सकती है, जब हमारे व्यावसायिक मनुष्य अपनी नैतिक शक्तियों तथा मानसिक योग्यताओं को आधुनिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रयोग करें। व्यावसायिक शिक्षा का आधार सिर्फ व्यावसायिक दक्षता ही नहीं हो-ना चाहिए वरन् सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना, मानवीय मूल्यों को समझने की क्षमता एवं बगैर द्वैष यथार्थता को देखने की क्षमता का भी पाया जाना जरुरी है । व्यावसायिक शिक्षा ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सोच की एक नई दिशा दी है। कार्य आधारित होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा हेतु ठोस अन्तर संरचना, प्रायोगिक कार्यात्मक प्रशिक्षण और आधारभूत सुविधाएँ होना आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा की वर्तमान दशा में सुधार के लिए निम्नांकित प्रयास किये जाने चाहिए -

१.व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों के स्थानन (रोजगार अवसर) की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए । इस कार्य के लिए पंचवर्षीय योजनाओं में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों को उत्तरदायित्व सौंपा जाना चाहिए। एक कुशल स्थानन पध्दति का विकास किये बि-ना व्यावसायिक शिक्षा कें विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हो सकेंगे ।

२.प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता या छात्रवृत्ती प्रदान की जानी चाहिए।

३.विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार पाठ्यक्रमों को इस प्रकार विकसित किया जाना चाहिए कि छात्र विभिन्न विकल्पों में अपने ज्ञा-न ा प्रयोग करना सीख सके ताकि उसमें गतिशीलता बनी रहे।

४.इस अवधारणा को तोड़ा जाना चाहिए कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम योग्य व्यक्तियों के लिए होते हैं। अभिभावकों को और समाज को व्यावसायिक पाठयक्रम की आवश्यकता को अनुभव करना चाहिए साथ ही छात्रों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

५.व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ पढ़ाया जाना चाहिए। अन्य विषयों के साथ एक व्यावसायिक विषय की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी की व्यावसायिक दृष्टि को विकसित करने का पर्याप्त अवसर मिले।

६.व्यावसायिक पाठ्यक्रम, व्यावसायिक मूल्यों पर आधारित होने चाहिए। इनका शिक्षण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी जिस विधा में प्रशिक्षण प्राप्त करता है उसे अपनाये। शैक्षिक अनुभव के रुप में लाभांश होता रहे।

७.स्कूल शिक्षा के व्यावसायिक पाठ्यक्रम एवं उच्च शिक्षा के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में समन्वय होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अर्जित ाशिल में अभिवृध्दि हेतु प्रयास कर सके ।

८.प्रशिक्षण संस्थानो एवं उद्देश्यों के बीच सतत सम्पर्क रहना चाहिए, जिससे प्रशिक्षण संस्थान उद्योगों की आवश्यकतानुसार श्रम शक्ति का विकास कर सकें। प्रशिक्षण संस्थानों को अपने विद्यार्थियों के कार्यात्मक प्रशिक्षण के लिए प्रयोगशालाओं की बजाय वास्तविक कारखानों या उद्यम इकाईयों में भेजने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

९.प्रशिक्षण के उपरान्त भी व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों को एक मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए, जहाँ से विद्यार्थी रोजगार के अवसरों की सतत जानकारी प्राप्त कर सके ।

१०.प्रशिक्षण संस्थानों से कारखानों या उद्यम इकाईयों का सीधा सम्बंध होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर प्रशिक्षण के दौरान ही प्राप्त हो सके।

११.सामान्य शिक्षा के सभी महाविद्यालयों में व्यावसायिक मार्गदर्शन और स्थानन प्रकोष्ठ स्थापित किये जाने चाहिए, जहाँ से विद्यार्थी को व्यावसायिक क्षेत्र के रोजगार अवसरों की जानकारी मिल सके।

१२.उच्च एवं कुशल प्रशिक्षणार्थी अधिकतर देश से बाहर जाते है, क्यों, कारण तलाशना होगा ? संभव है कि वे डॉलर के पीछे भाग रहे है। उन्हें उचित वेतन नहीं दिया जाता है। अर्थात डॉलर और रुपये के बीच की दूरी को समाप्त करना होगा।

१३.प्रशिक्षणार्थियों को डॉलर के मुकाबले उच्च वेतन की व्यवस्था की जानी चाहिए, साथ ही उन्हे समय-समय पर प्रशिक्षण के लिए विदेश जाने की सुविधा दी जानी चाहिए।

१४.प्रशिक्षणार्थियों को विदेशी नौकरियों पर अंकुश लगाया जाना चाहिए क्योंकि एक कुशल प्रशिक्षणार्थी हम बनाते हैं, फिर उसकी सेवायें विदेशों में क्यो ? इस प्रकार का पलायन (डॉलर के पीछे) रोकना होगा।

अतः व्यावसायिक शिक्षा को समाज और राष्ट्र के विकास को हर पहलू से जोड़ा जाना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा को राष्ट्र के विकास की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए इस पर और अधिक जोर देने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में व्यवसायिक शिक्षा न केवल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक है वरन् प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर भी उतनी ही जरुरी है। देश के आर्थिक विकास के लिए कुशल मानवीय संसाधन होना एक अनिवार्य आवश्यकता है। हम कह सकते हैं कि व्यावसायिक शिक्षा एक मूल्य पर आधारित शिक्षा है क्योंकि यह कर्मठता सिखाती है। व्यावसायिक शिक्षा को प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य कर देना चाहिए, क्योंकि उसके कौशल के अंकुर बाल्यवसथा से ही फूटने लगेंगे । उच्च शिक्षा तक आते-आते वह पूर्ण रुप से कुशल प्रशिक्षणार्थियों के रुप में परिपक्व हो सकेगा। निश्चितः व्यावसायिक शिक्षा जन-जन की माँग है । सुख-समृध्द राष्ट्र के लिए व्यावसायिक शिक्षा अनिवार्य है।

सहायक ग्रंथ

१. प्रयोगशिल शिक्षणाचे विविध प्रवाह : डॉ. शिंदे एच.जे.

२. व्यावसायिक शिक्षा स्त्रोत : प्रा. पवार बी. बी.